एसओएस चिल्ड्रन विलेज ऑफ इंडिया ने फरीदाबाद में बच्चों के लिए बाहरी शिक्षा के लिए स्थान बनाया

05 January 2022, Faridabad - एसओएस चिल्ड्रेन्स विलेज ऑफ इंडिया, भारत के सबसे बड़े स्वयं-कार्यान्वयन बाल देखभाल एनजीओ ने शिक्षा की निरंतरता को बनाए रखने और स्वास्थ्य और स्वच्छता जागरूकता बढ़ाने के लिए फरीदाबाद में वंचित समुदाय के बच्चों के लिए बच्चों के लिए सुविधायुक्त बाहरी शिक्षा के स्थान का निर्माण किया है।

देश भर में स्कूलों के बंद होने से बच्चों की शिक्षा बाधित हुई थी। शिक्षा की निरंतरता को प्रोत्साहित करने के इरादे से संस्था ने फरीदाबाद के शिवाजी नगर स्लम की पांच दीवारों को बाल संरक्षण, शिक्षा, स्वास्थ्य और स्वच्छता से संबंधित जानकारी के साथ रंग दिया है। जब स्कूल बंद थे तब उनमें से एक दीवार को वास्तव में सामुदायिक स्तर पर लगातार सीखने को प्रोत्साहित करने के लिए लिखने लायक स्थान (ब्लैकबोर्ड) में बदल दिया गया। यह पारिवारिक मजबूती कार्यक्रम शिवाजी नगर-ऑटो पिन के तहत एक पहल थी।

शिवाजी नगर फरीदाबाद में एक स्लम बस्ती है। आबादी में आसपास के राज्यों के प्रवासी मजदूर शामिल हैं। यहां पर करीब 10,000-12,000 की आबादी है। परिवार पास के कारखानों में कम वेतन वाली नौकरियों में लगे हुए हैं या दैनिक न्यूनतम कमाई पर निर्भर हैं।

पानी, शौचालय और ताजी हवा जैसी बुनियादी सुविधाओं की कमी के कारण मलिन बस्तियों में जीवन चुनौतीपूर्ण है। अधिकांश घरों में केवल एक कमरा होता है जिसमें कोई वेंटिलेशन (हवादार) नहीं होता है, लेकिन 5-10 सदस्यों वाले परिवारों के लिए घर के रूप में काम करता है। परिवार एक कमरे में खाना बनाते, खाते और सोते हैं। ये संसाधन और बुनियादी ढाँचे की कमी स्लम में पले-बढ़े बच्चों के समग्र विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है।

एसओएस चिल्ड्रन विलेज ऑफ इंडिया के महासचिव, श्री सुमंत कर ने इस पहल पर अपनी राय जाहिर करते हुए कहा, " स्लम में रहने वालों विशेष रूप से बच्चों ने अपनी शिक्षा को महामारी से बुरी तरह बाधित होते देखा है, खासकर जब स्कूल से दूर रहकर अपनी स्कूली शिक्षा जारी

रखने के लिए उनके पास इंटरनेट और/या स्मार्ट फोन तक पहुंच नहीं है। बच्चों की एक बड़ी संख्या, विशेष रूप से लड़कियों है जो कमजोर समायोजन से लंबे समय से स्कूल से बाहर हैं, स्कूल फिर से खुलने पर कभी वापस नहीं आ सकते हैं। इस पहल ने स्वास्थ्य, स्वच्छता, शिक्षा आदि जैसे महत्वपूर्ण पहलुओं को दोहराने में मदद की। हम चाहते थे कि बच्चे जब स्कूल नहीं जा पा रहे थे तब भी बच्चों को कुछ हद तक सीखने का मौका मिले।"

बाल पंचायत की सदस्य रीना* कहती हैं, "महामारी के कारण स्कूलों के बंद होने से हमारे जीवन में बड़ी रुकावटें आई हैं, जिससे हम अपने घरों में सीमित रह गए हैं। सामाजिक संपर्क की कमी हमारे संवादात्मक कौशल को प्रभावित कर रही थी। हमारे इलाके की ज्ञान से भरी दीवारों ने हमारी बहुत मदद की है। हम सभी जगह पर आना पसंद करते हैं क्योंकि दीवारों को चित्रित किया गया था जिसने हमें सीखने, खेलने और काम में लगे होने की सुविधा दी है। इसने हमें नए दोस्त बनाने में मदद की है, हमारे मेलजोल के कौशल को बढ़ाया है। इन पेंटिंग्स ने हमारे इलाके की सामान्य नीरस दीवारों में जीवंतता ला दी है, जिससे हमें महत्वपूर्ण संदेश प्रसारित करते हुए ऐसे कठिन समय में एक सुकून और आशा की अनुभूति होती है।"

भौतिक वातावरण बच्चों के लिए एक सक्षम स्थान बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। महामारी सभी के लिए कठिन थी लेकिन बच्चों को इससे भी अधिक नुकसान हुआ।

*गोपनीयता बनाए रखने के लिए नाम बदल दिया गया है

लॉकडाउन ने बच्चों को उनके घरों की चार दीवारी तक सीमित कर दिया। इसने स्कूलों में अपने साथियों के साथ सीखने और मिलने-जुलने का एकमात्र समय छीन लिया। रिपोर्टों से पता चलता है कि बच्चों को अपने घरों में लंबे समय तक बंद रखना बच्चों की समग्र भलाई को प्रभावित करता है और उनके विकास में बाधा उत्पन्न कर सकता है। वर्तमान परिदृश्य के साथ, स्कूल जाने वाले बच्चों में ड्रॉप-आउट (बीच में स्कूल छोड़ने वाले) की संख्या में वृद्धि का एक उच्च जोखिम है।

एसओएस चिल्ड्रन्स विलेज ऑफ इंडिया की पहल का उद्देश्य समुदाय को प्रभावित करने वाले शिक्षा, स्वास्थ्य और बाल संरक्षण जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा करना है। आज सामुदायिक जानकारीयुक्त दीवारों (ब्लैकबोर्ड) का उपयोग विभिन्न जागरूकता कार्यक्रमों और समुदाय में कार्य करने वाली सुधारात्मक कक्षाओं के लिए किया जा रहा है। यह बाल पंचायत (बाल संसद) के लिए उनकी दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों के लिए एक स्थान भी बन गया है।

About SOS Children's Villages of India

Established in 1964, SOS Children's Villages of India provides children without parental care or at the risk of losing it, a value chain of quality care services that goes beyond childcare alone, to ensuring comprehensive child development. Our customized care interventions such as, Family Like Care, Family Strengthening, Kinship Care, Short Stay Homes, Foster Care, Youth Skilling, Emergency Childcare and Special Needs Childcare are aimed at transforming lives and developing children under our care into self-reliant and contributing members of society. We empower vulnerable families in communities to become financially independent, thereby enabling them to create safe and nurturing spaces for children under their care. Today, over 6,500 children live in 440 family homes inside 32 SOS Villages in 22 States/UTs, from Srinagar to Kochi and Bhuj to Shillong. They are lovingly cared for and nurtured by 600 SOS mothers and aunts. As India's largest self-implementing childcare NGO, SOS Children's Villages directly touches the lives of around 28,500 children every year.

For more information, please visit https://www.soschildrensvillages.in